यूनिट 6 आतंकवाद और पर्यटन_

संरचना

6.0 उददेश्य

6.1 परिचय

6.2 आतंकवाद और आतंकी का मनोविग्यान

6.3 पर्यटन उदद्योग: आसान लक्ष्य

6.4 यहां हम समझने का प्रयास करेंगे कि----

6.4.1 आतंकवाद किस तरह पर्र्यटन स्थलों को नुकसान पहंचाता है।

6.4.2 आतंकवाद का डर कैसे पर्यटकों और मेजबानों के मनोविज्ञान को प्रभावित करता है।

6.4.3 आतंकवाद पर्यटन की मांग को कैसे मंद बना देता है।

6.5 टूरिज्म को नुकसान पहुंचाने वाली अन्य हिंसक गतिविधियां

6.6 आतंकी हमलों के परवर्ती दौर में पर्यटकों को सम्हालने की चुनौती।

6.6.1 आतंकी हमलों के बाद, पर्यटन स्थलों पर, टूरिस्टों की त्वरित आवश्यकताएं

6.6.2 आतंकी हमलों के बाद की परिस्थितियों में पर्यटको की आवश्यकताओं की पूर्ति और देखभाल के तरीके।

6.7 पर्यटन स्थलों की पुन: बहाली ।

6.8 समापन ।

6.9 प्रमुख शब्द

6.10 अभ्यास की प्रगति जांचने के लिए प्रश्नों के उत्तर ।

6.11 इस यूनिट के लिए कुछ जरूरी पुस्तकें ।

6.0 उद्येश्य ::

इस यूनिट का अध्ययन करने के बाद आप को ससझ में आ जाना चाहिए -

- आतंकवाद को अदृश्य युद्ध कयों कहा जाता है ।
- पर्यटन उद्योग पर आतंकवाद का प्रभाव 1
- आतंकी हमले के बाद की बदली परिस्थिति में पर्यटकों की जरूरतें ।
- पर्यटन क्षेत्र पर आतंकवाद का खतरा कम करने के उपाय ।
- पर्यटन - स्थल का पुनर्सृजन

6.1 प्रस्तावना

'वैश्विक आतंकवाद डाटा बेस' (ग्लोबल टेररिज्म डाटाबेस) एक मुक्त डाटा बेस है जिसमें दुनिया भर की आतंकी घटनाओं का लेखा जोखा समाहित रहता है । इस संस्था ने आतंकवाद की परिभाषा इस प्रकार की है - ' जब कोई संस्था, जो राज्यपोषित न हो , राजनीतिक आर्थिक सामाजिक या धार्मिक उद्येश्यों की पूर्ति के लिए धमकी ,हिंसा या बलात्कार का सहारा लेती है तो उसे 'आतंकवाद' कहा जाता है ।

आतंकवाद पूरी दुनिया के लिये बहुत बडा खतरा है। पर्यटन उदयोग भी इससे अछूता नहीं है । स्थान और परिस्थिति के हिसाब से अलग अलग देशों में आतंकवाद के पनपने और फैलने की वजहें अलग अलग हो सकती हैं, लेकिन, दुनिया भर के पर्यटन उदद्योग को आतंकावाद की वजह से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एक जैसा नुकसान उठाना पडता है। पर्यटन उद्योग केवल शांति और सुरक्षा के माहौल में ही

विकास कर सकता है । पर्यटन स्थलों पर देश और दुनिया भर से शौलानी आते है । पर्यटक सुरक्षित और शांत माहौल में यात्रा का आनन्द उठा सकें,इसके लिए पर्यटन स्थलों पर शांति और सुरक्षा का माहौल होना जरूरी है। यही कारण है कि पर्यटन उद्योग को शांति का उद्योग कहा जाता है । किसी पर्यटक स्थल पर आतंकवादी हमला हो जाने के बाद, पर्यटकों में वहां जाने का आकर्षण खत्म हो जाता है। यही नहीं, आतंक का भय व्याप्त हो जाने के कारण पर्यटक उस स्थान के आस पास के इलाकों में यात्रा करने से भी कतराने लगते हैं,इसलिए स्थान विशेष के साथ साथ पूरे क्षेत्र की अर्थव्यस्था पर बुरा असर पडने लगता है । आतंकी हमले के कारण,पर्यटन उदद्ययोग के साथ अन्य उद्योंगों को भी नुकसान उठाना पडता है । नुकसान का सही सही आकलन करना बहुत मुश्किल होता है क्योंकि नुकसान का ठीक ठीक पता करने के लिए ढेर सारा समय और परिश्रम चाहिए होता है। आतंकी हमला छोटा हो या बडा,एक बार हुआ हो या कई बार, टूरिज्म इंडस्ट्री पर उसका बुरा प्रभाव पडना तय है। हमला यदि सीधे पर्यटन स्थल , पर्य्रटन के संसाधनों अथवा आनुषंगिक सेक्टर पर हुआ हो, तो भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वहां की आम जनता पर इसका असर होना लाजिम है। जीवन यापन के लिए पर्यटन से जुडे कारोबार पर आश्रित स्थानीय लोगों को लम्बे समय तक संकट से जूझना पडता है।

इस यूनिट का उद्येश्य आतंकवाद और पर्यटन में सम्बन्ध पर विचार करना है । आतंक क्या है? 'टूरिज्म' आतंकवादियों का आसान शिकार क्यों बनता है? आतंकी हमलों से टूरिज्म व्यवसाय को कितना नुकसान होता है? पर्यटकों को किन मुश्किलों से गुजरना पडता है? अपने घर परिवार से दूर, अनजान जगह पर रहते हुए, हमलों के खौफ से किस तरह उबरना होता है ? ये कुछ सवाल हैं जो अकसर आप के दिमाग में आते होंगे । इस तरह के सवालों पर विचार करना ही इस यूनिट का मकसद है। सबसे पहले हम आतंकियो के मनोविज्ञान को समझने का प्रयास करेंगे

फिर यह जानना चाहेंगे कि आतंकबादी लोग अकसर क्यों पर्यटन स्थलों को ही अपना निशाना बनाते हैं।? इसके बाद, पर्यटन उद्ययोग पर आतंकी हमलों के दुष्प्रभावों को समझने और बताने का प्रयास करेंगे कि आतंकी हमलों की मुश्किल घडी में पर्यटकों को किस तरह सम्हालना चाहिए । आतंकी हमलों के खौफ से उबरने के बाद टूरिज्म उद्योग अब फिर तेजी से उभर रहा है। इस यूनिट में इस पर भी किया जायेगा ।

आतंकवादी ज्यादातर टूरिस्ट स्थलों को अपना निशाना इसलिए बनाते हैं कि वहां देश'-दुनिया के लोग आते रहते हैं । टूरिस्ट स्थलों पर हमला करने से आतंकवादियों की विचरधारा पूरी दुनिया में आसानी से प्रचारित हो जाती है और लोगों की नजरों मे उस देश की छवि भी खराब हो जाती है जिससें भविष्य में वहां पर्यटक आना बंद कर देते है। आतंकवादी गतिविवधयो के डर से , पर्यटन की योजना बना रहे लोगों में उस स्थल पर जाने का उत्साह खतम हो जाता है और किसी दूसरी जगह की यात्रा के बारे सोचने लगते हैं। आतंक प्रभावित क्षेत्रों में टूर आयोजित करने वाली एजेंसियों पर इसका बुरा असर पडता है । पर्यटन के क्षेत्र में मौखिक प्रचार बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । आतंकी हमले के तुरंत बाद, वहां पर मौजूद टूरिस्टों की जरूरते एक जैसी नहीं रह जाती । यहां तक कि हमलों से बेहद कम पीडित या बिलकुल ही अप्रभावित टूरिस्ट भी अपने लिए खास सुरक्षा सुविधाओं और देख्भाल की मांग करने लगते है । उनकी संतुष्टि के अनुरूप सेवा देने में कोई कमी रह जाने पर उस देश या जगह के बारे में नकारात्मक प्रचार करने लग जाते हैं । इसलिए, पर्यटन उदयोग पर आतंकवाद के प्रभाव को गहराई से समझना और उससे सम्बन्धित अन्य सम्स्याओं पर काबू पाना बहुत आवश्यक है । लेकिन इससे भी पहले जरूरी है , आतंकियों के मनोविज्ञा को समझ लेना ।

6.2 :: आतंकवाद का मनोविज्ञान

आतंकवाद मुनष्यता के लिए अभिशाप है। इस दुनिया में कोई भी जन्म से आतंकवादी नहीं पैदा होता । युवावस्था में कुछ लोग संयोग वश ऐसे गलत लोगों की संगत में पड जाते हैं जो मान कर चलते हैं कि हिंसा के द्वारा वे अपनी सभी समस्याओं को हल कर सकते हैं । दुनिया के तमाम मुल्कों में आतंकी ग्रुप कुछ यूवावों को सशस्त्र आतंकी कार्यवाहियों में शामिल करके हथियार बंद संघर्ष तथा देश की सुरक्षा एजेंसियों और सामान्य जनता के विरुद्ध अदृश्य युद्ध के लिए तैयार कर लेते हैं । ये आतंकी ग्रुप अपने या किसी बाहरी देश के आतंकी संगठनों द्वारा संचालित हो सकते हैं। आतंकवाद चाहे देश में पनपा हो या विदेश में, पर्यटन स्थल की शांति और सुरक्षा के लिए उनकी गतिविधिया समान रूप से खतरनाक होती हैं । आतंकी गतिविधियां देश को तरह तरह से नुकसान पहुंचाती हैं । धन हानि की भरपाई किसी तरह से हो भी सकती है लेकिन जन हानि की भरपाई नहीं की जा सकती । अपने मित्रों प्रियजनों और परिजनों को खो देने का दुख जीवन भर सालता रहता है ।

न्यूयार्क में 11 सतिम्बर 2001 का हमला ,जिसे अब 9/1। कहा जाता है , के बाद, आतंकवादी विचारधारा और आतंकियों के मनोविज्ञान को समझना, आतंकवाद-विरोधी मुहिम के विशेषज्ञों के लिए एक चुनौती पूर्ण विषय बना हुआ है । इसे समझ लेने के बाद ही किसी व्यक्ति के आतंकी बनने के कारणों को समझना तथा आतंक पर काबू पाना मुमकिन हो पायेगा । दुनिया के सभी आतंकवाद विरोधी विशेज्ञ मानते हैं कि किसी देश में आतंकवाद के पनपने और बढने के आधारभूत कारणों का पता लगाना आवश्यक है। अकसर लम्बे समय तक अनसुलझी छोड दी

गयी जन- समस्यायें भी आतंकवाद के पनपने का कारण बन जाती हैं । देखने में आया है कि आतंकवादी, अपने देश या सीमावर्ती देशों के भोले भाले नागरिकों के मन में, राज्य व्यवस्था के विरूद्ध छिपे आक्रोश को भडका कर अपनी मांगे मनवाने के लिए हथियारबंद संघर्ष का रास्ता अपनाने को प्रेरित करने में कामयाब हो जाते हैं। संर्घष शुरू हो जाने पर भडकाऊ विचारों और अन्य सामग्री के जरिये आतंकवादी संगठन अपने लडाकों की सहायता करते हैं ताकि सरकार उपद्रव को कुचलने के लिए सेना बुलाने को बजबूर हो जाय । सीमा पार के आतंकवादी संगठनों का कुल यही मकसद होता है । आतंकी उपदव से निपटने के लिए सेना अगर उतर गयी तो वापस भेजना आसान नहीं रह जाता । जब कभी हालात सामान्य होने शुरू होते हैं,ये आतंकवादी किसी बहाने से उसे फिर भडका देते हैं । इस समस्या का समाधान होने में लम्बा वक्त लगेगा । इसलिए ,इसको हल करने के लिए, आतंकी ग्रुपों की विचारधारा और मनोविज्ञान का गहराई से अध्ययन आवश्यक है।

समाज- मनोविज्ञान की मदद से, आतंकवाद के मनोविज्ञान को किसी हद तक समझा जा सकता है। उनका मनोविज्ञान यदि समझ में आ जाय तो यह पता करना आसान हो जायेगा कि पर्यटन की सुरक्षा व्यवस्था लगातार कडी करते जाने के बावजूद , सभी देशों के आतंकी क्यों पर्यटन जैसे कुछ खास खास उद्योगों को ही बार बार निशाना बनाते हैं । आतंकवाद पनपने के अलग अलग कारण हो सकते हैं । एक ही जगह पर एक से अधिक आतंकी ससमूह सक्रिय हो सकते हैं और उनकी विचारधारा मे भी पर्याप्त फर्क हो सकता है। **मनोविकृति सिद्धान्त** के विशेषज्ञ कहते हैं कि आतंकवादी क्योंकि बनाये जाते है,इसलिए बुद्धिहीन होते है1 जबकि **तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत** के अनुसार , सभी आतंकी बुद्धिहीन नहीं होते 1 उनके आतंकी बनने के पीछे ढेर सारे आंतरिक और बाहरी कारक जिम्मेदार होते है ।

आतंकवादियों और आतंकवाद के मनोविज्ञान का मूल आधार इस प्रकार है-

» आतंकवादी का अपने उद्येश्य में दृढ़ विश्वास होता है ।
» उन्हें अपने लक्ष्य पर मिटने के लिए पूरी तरह प्रशिक्षित किया गया होता है ।
» उन्हें हिंसा को अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है और जघन्य काम के लिए मानसिक रूप से कठोर बना दिया जाता है
» उन्हें पूरी तरह विश्वास दिला दिया गया होता है कि आतंकवाद समाज में बुराइयों को हल करने का एकमात्र उपलब्ध विकल्प है ।
» किसी घातक मिशन पर भेजने से पहले उन्हें बाकी लोगों से अलग कर दिया जाता है
» वे चतुर, अनुशासित, व्यावहारिक, अवसाद ग्रस्त, असुरक्षित और असामाजिक होते हैं
» वे किसी समस्या का शांतिपूर्ण तरीके से समाधान खोजने में बिलकुल यकीन नहीं करते हैं।
» वे पूरे धैर्य से अपने 'प्लान' पर काम करते हैं और कुशल योजनाकार होते हैं।

6-3 पर्यटन क्षेत्र :: आसान लक्ष्य

आतंकवादी आमतौर पर कम संसाधन में पूरा हो सकने वाले, आसान ठिकानों पर हमला करते हैं । पहले लक्ष्य चुनते हैं फिर सावधानी से योजना बनाते हैं और उसके बाद हमले को अंजाम देते हैं । सकारी अधिकारियों और सुरक्षा बलों पर दबाव बनाने के लिए आम तौर पर ऐसी जगहों पर हमला करते हैं जहां विदेशी नागरिकों

और आम जनता की संख्या अधिक होती है । आतंकवादियों द्वारा हमला किये जाने पर परिवहन व्यवस्था को फिर से सामान्य बनाने में काफी समय और धन लगता है । जैसा कि आप जानते हैं ,पूरी दुनिया में परिवहन व्यवस्था पर्यटन उद्योग की रीढ़ है । क्योंकि परिवहन के सभी माध्यम आम जनता के लिए सहज ही उपलब्ध होते हैं, इसलिए आतंकवादी अपने लक्ष्य पर हमला करने के लिए अकसर इसी माध्यम का इस्तेमाल करते हैं । लोगों के मन में दहशत पैदा करने के लिए आतंकी समूहों नें हाल के दिनों में होटल और रेस्टरेंट को भी दुनिया के कई हिस्सों में निशाना बनाया ।

आतंकवादी चाहते हैं कि देश और दुनिया में हमेशा डर और आतंक का माहौल बना रहे । इसलिए जब चाहते हैं,हमला करते रहते हैं। इससे उस जगह की पर्यटन गतिविध पूरी तरह चरमरा जाती है । सफल आतंकी अभियान चार तत्वों पर निभर्र करते हैं-लोगों की भावनाएं भडकाना ।
तनाव केा बढाते रहना ।आरोप प्रत्यारोप । धैर्य ।

इन तत्वों का अनुसरण के साथ अकसर वे अपनी रणनीति में फेरबदल भी करते रहते हैं । कम से कम खर्च और संसाधन से अधिक से अधिक सरकारी सम्पत्ति का नुकसार कर देना चाहते हैं । इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए, पर्यटन स्थलों को आतंकवादी अपना निशाना बनाते हैं । क्योंकि पर्यटन पर हमला करने से दहशत की लहर पूरी दुनिया में एक साथ फैल जाती है । पूरी दुनिया में आतंक का माहौल बनाना आसान हो जाता है ।

6-4- पर्यटन उद्योग पर आतंकवाद के प्रभाव को समझने की एक कोशिश -

पर्यटन के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को पर्यटन व्यवसाय पर आतंकवाद के असर को समझना बहुत आवश्यक है । 9/11 के बाद इस विषय पर लोगों ने गहराई से सोचना शुरू कर दिया है । पर्यटकों के व्यवहार में होने वाले बदलाव , निर्णय क्षमता, मेजबान के मनोबल और व्यवस्थापकों पर आतंकवाद के प्रभाव का अध्ययन करना आज की जरूरत है।

पर्यटन व्यवसाय पर आतंकवाद के प्रभाव को निम्न प्रकार से विभेदित किया जा सकता है।

- आतंकवाद पर्यटन स्थलों को कैसे प्रभावित करता है।
- आतंकवाद मेजबान के मनोविज्ञान पर क्या प्रभाव डालता है।
- आतंकवाद पर्यटन की मांग को कैसे प्रभावित करता है।

6-4-1 आतंकवाद/आतंक पर्यटन को कैसे प्रभावित करता है

अलग-अलग तीव्रता के कई आतंकवादी हमले या कोई एक आतंकी घटना भी पर्यटन स्थल को अधिकतम सीमा तक प्रभावित कर सकती है । आतंकी संगठन अक्सर पर्यटन स्थलों की अधिरचना को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निशाना बनाते हैं । आतंकी संगठन जिस भी तरह का हमला करे , वहां के पर्यटन और आने वाले पर्यटकों की संख्या पर उस हमले का बुरा असर पडना तय है । इसके अलावा, उस स्थान के आस पास के शहरों सहित पूरे परिक्षेत्र पर उसका असर दिखने लगता है1

आतंकी घटना किसी पर्यटन स्थल पर जब 'पीक सीजन' मे घटती है तो पर्यटन व्यवसाय पर सबसे अधिक और सीधा असर पडता है 1 आक्रमण यदि 'आफ' सीज़न के दौरान होता है तो प्रभाव अप्रत्यक्ष होता है।

विभिन्न पर्यटन स्थलों का निरीक्षण करने के आधार पर यह देखने में आया है कि हमले के बाद,आतंकवाद आम तौर पर पूरी दुनिया मे पर्यटन स्थलों को निम्न तरह से प्रभावित करता है।

- आतंकी घटना के समय ,पर्यटन स्थल पर मौजूद रहे दूर देश के पर्यटक वहां से निकल जाना चाहते है ।
- उस पर्यटन स्थ्ल की ओर आने वाले पर्यटक रास्ते में ही अपनी यात्रा स्थगित या रद्द कर के अपने मूल स्थान को लौट जाते हैं अथवा अपना गंतव्य बदल लेते हैं।
- पर्यटक निकट भविष्य में उस स्थान की यात्रा करने का इरादा छोड देते हैं।
- पर्यटन के हितधारकों (स्टेक होल्डर्स) का हौसला पस्त हो जाता है । पर्यटन और उससे सम्बन्धित व्यवसाय में उनकी रूचि खत्म होने लगती है ।
- जिन लोगों का व्यवसाय पर्यटन उद्योग की गतिविधयों पर निर्भर होता है, रोजगार ख्त्म हो जाने से ऐसे लोगों का जीवन कठिनाई में पड जाता है
- जिस पर्यटन व्यवसायी की आतंक प्रभावित स्थान के अलावा, किसी दूसरे स्थान पर कोई शाखा नहीं होती, आमदनी बंद हो जाने के कारण उसे बहुत ज्यादा कठिनाई का सामना करना पडता है।
- दुनिया की नजरों में देश की छवि एक दम से गिर जाती है और इस आघात से उबरने में बहुत वक्त लगता है।
- आतंकी गतिविधियों पर विराम लगाने के लिए सुरक्षा चेकिंग बहुत कडी कर दी जाती है ।

» मीडिया द्वारा जब सुरक्षा बलों के कडे बंदोबस्तों को टीवी और अन्य माध्यमों से दिखाया जाता है तो उस स्थान के बारे में लोगों के मन में डर बैठ जाता है और वहां की यात्रा करने से बचने लगते हैं ।

» आतंकी घटना यदि देश के किसी खास भौगोलिक हिस्से से सम्बन्धित नहीं है तो उसका प्रभाव घटना प्रभावित जगह के आस पास के इलाकों पर भी पडता है ।

» कई देश अपने नागरिकों को सावधान और सतर्क करने के लिए सूचनाएं प्रसारित करते रहते हैं ।

» ऐसे 'एलर्ट' मेसेज,आतंक प्रभावित जगहों की यात्रा का हौसला रखने वाले लोगों को भी हतोत्साहित कर देते हैं।

6-4-2 आतंकवाद मेजबानों और पर्यटकों के मनोविज्ञान को कैसे प्रभावित करता है

आतंकवाद को पूरी दुनिया में 'पर्यटन की इच्छा का हत्यारा' (टूरिज्म मूड किलर) कहा जाता ह। । आतंकी घटनायें पर्यटक और मेजबान दोनों के मनोविज्ञान को समान रूप से प्रभावित करती हैं । यहां आतंक पीडित होना या न होना कोई मायने नहीं रखता । इस मनोवैज्ञानिक दुष्प्रभाव का अंदाजा लगाना बहुत मुश्किल है क्योंकि दीर्घकालिक गहन शोध के बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है । कई बार जब पर्यटन स्थल के हालात सामान्य होने लगते हैं और पर्यटक फिर से आने शुरू हो जाते हैं तो लोगों को लगने लगता है कि अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब कोई समस्या नहीं है ,लेकिन यह सही नहीं है । हकीकत यह है कि आतंक प्रभावी पर्यटन स्थल के मेजबानों और पर्यटकों का मनोविज्ञान सामान्य होने में

काफी समय लगता है । मेजबान और पर्यक के मनोविज्ञान को आतंकवाद कैसे प्रभावित करता है, इसे नीचे विन्दुवार दिया गया है।

» आतंकी हमले के बाद, पर्यटक वहां से चले जाते हैं और वह जगह पूरी तरह वीरान हो जाती है । इससे मेजबानो का हौसला टूट जाता है।
» पर्यटन उद्योग में मानवीय संवेदना का बडा खयाल रखा जाता है । पर्यटन स्थल छोड कर पर्यटक जब चले जाते हैं तो मेजबान और पर्यटक दोनो की संवेदना और मनोविज्ञान पर विपरीत प्रभाव पडता है ।
» पर्यटन से होने वाली कमाई के अलावा, मेजबान देश का आदमी जब किसी पर्यटक का अपने देश में स्वागत करता है,तो उसे एक प्रकार की संतुष्टि का अनुभव होता है। इसलिए , आतंकी घ्टना के बाद असुरक्षा कारणों से पर्यटक जब लौटने लगते हैं तो मेजबान को गहरी पीडा होती है ।
» आतंकी हमले के बाद घटनास्थल की एक नकारात्मक छवि बननी शुरू हो जाती है और मीडिया के कारण पूरी दुनिया में फैल जाती है । इससे मेजबान खुद को असहाय महसूस करने लगते हैं ।
» हमले के आघात से उबरने में पर्यटन स्थल को समय लगता है । पर्यटन सेवेाओं को पुन: पटरी पर लाने और पर्र्यटकों को पहले की तरह आकर्षित करने में काफी समय लग जाता है । ऐसी परिस्थिति में छोटी पर्यटन एजेंसियों को ढेर सारी समस्याओं का सामना करना पडता है और कई बार जीवन यापन के लिए किसी अन्य विकल्प की तलाश भी करनी पडती है ।

» मेजबान और टूरिस्ट ,जो आतंकी हमलों में बाल बाल बच जाते या घायल हो जाते हैं, आजीवन उस हादसे को भूल नहीं पाते । यह भी देखा गया है कि कुछ मेजबान हमेशा हमेशा के लिए किसी अन्य शहर में चले जाते हैं जबकि

टूरिस्ट फिर कभी भी उस स्थान पर वापस नहीं आते । आतंकी हमले में जिनके प्रियजन मारे गये, उनके दिल पर घटना का खौफ किसी घाव की तरह हमेशा के लिए अंकित हो जाता है1

6 .4. 3 आतंकवाद पर्यटन की मांग को कैसे प्रभावित करता है

किसी पर्यर्यटन स्थल पर जब कोई आतंकी घटना घटती है तो उसका प्रभाव वहां तुरंत दिखने लगता है। टिकटों की बुकिंग तत्काल कैंसिल होने लगती है और पर्यटन हित धारकों पर दबाव बढने लगता है । पर्यटन सम्बन्धी हर तरह की मांग प्रभावित होने लगती है । । "किसी विशेष गंतव्य की यात्रा की मांग, यात्रा करने वाले व्यक्ति की प्रवृत्ति की क्रियाशीलता (फंक्शन) और प्रस्थान तथा गंतव्य- स्थल के बीच के पारस्परिक प्रतिरोध के अनुपात से तय होता है ।" Goeldner & Ritchie, 2009).

मांग = एफ (झुकाव ,प्रतिरोध)

इसे इस प्रकार समझा जा सकता है- यहां **एफ** का मतलब फंकशन है। और प्रोपेंसिटी का अर्थ है, यात्रा करने की प्रवृत्ति । आदमी की यात्रा करने की प्रवृत्ति और उत्साह का कानूनी तौर पर मापन किया जाता है तथा यांत्रिक परीक्षण के जरिये व्यक्ति की मनोरचना की ऐतिहासिक बनावट और बुनावट का अध्ययन

करके, यात्रा के प्रति उसके मोटीवेशन के स्तर का पता किया जाता है । **प्रतिरोध** का सम्बन्ध इस बात से है कि व्यकति में दूसरे पर्यटन सथलों की तुलना में उस स्थान विशेष के प्रति आकर्षण कितना प्रबल है और मांग तथा आकर्षण के बीच का व्युत्क्रमानुपात क्या है । यदि प्रतिरोध ज्यादा है तो मांग पर प्रभाव पडेगा । आतंकी हमला लोगों को यात्रा पर जाने से रोकता है, इसलिये पर्यटन की मांग कम हो जाती है ।

हम पर्यटन की मांग के तीन प्रकारों पर यहां चर्चा कर सकते हैं - प्रभावी या वास्तविक मांग। दमित मांग । और कोई मांग नहीं । आइए देखें कि आतंकी हमले का पर्यटन की मांगों पर क्या असर पडता है ।

1- **प्रभावी या वास्तविक मांग** -_इसका तात्पर्य उन लोगों की वास्तविक संख्या से है जो गंतव्य (पर्यटन) स्थल पर मौजूद होते हैं ।

इस प्रकार की माँग पर मुख्य रूप से जिन बातों का प्रभाव पडता है,वे इस प्रकार हैं

- » पर्यटक असुरक्षित महसूस करते हैं
- » परिवार के सदस्य या यात्रा- साथी को खो देने पर लोग और भी अधिक असुरक्षित महसूस करने लगते हैं
- » पर्यटक उस गंतव्य से दूर जाना चाहते हैं
- » क्या करना है, इसके बारे में परामर्श की आवश्यकता होती है
- » विश्वास कमजोर पड जाता है
- » मन में गुस्सा भर जाता है । नुकसान को सहन करने क्षमता कमजोर पड जाती है।

2- दमित मांग- मांग की इस श्रेणी में वे लोग शामिल हैं जो यात्रा करने की इच्छा तो रखते हैं किन्तु किसी कारण से यात्रा करने से रोक दिये जाते हैं।

दमित मांग को आगे दो भागों में विभाजित किया गया है -
संभावनाशील मांग और **स्थगित मांग**

अ- संभावित मांग:

वे लोग जो कभी न कभी यात्रा करेंगे, लेकिन कुछ व्यक्तिगत कारणों - जैसे छुटटी नहीं मिल पाने या धन के अभाव में, तुरंत या अपनी इच्छानुसार यात्रा नहीं कर सकते।

इस प्रकार की मांग पर पडने वाले मुख्य प्रभाव निम्न प्रकार हैं ।

» यात्रा के लिए,अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित, कोई वैकल्पिक या समानान्तर 'गंतव्य' चुन लेते हें ।

» पर्यटक असुरक्षित महसूस करते हैं

(2) स्थगित मांग ::

वे लोग जो आपूर्ति सम्बन्धी बाधाओं के कारण यात्रा स्थगित कर देते हैं। इस प्रकार की मांग पर पडने वाले मुख्य प्रभाव निम्न प्रकार हैं ।

» लोग बुकिंग एजेंसी की मदद से,और मीडिया की रिपोर्ट के आधार पर माहौल का अनुमान लगाते हैं

» मित्रों और रिश्तेदारों से राय मशविरा करते हैं।

» कुछ खतरा उठाकर 'गंतव्य-स्थल की यात्रा पर निकल पडते हैं जबकि ज्यादातर

लोग यात्रा स्थगित कर देने का विकल्प चुनते हैं।

(3) कोई मांग नहीं :

इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जो यात्रा करने की इच्छा नहीं रखते । इस प्रकार की मांग पर मुख्य रूप से निम्न प्रकार के प्रभाव देखने में आते हैं-

- » लोग खुश नहीं महसूस करते ।
- » अपवाद स्वरूप ही कोई ,राहत कार्य में शामिल होने के मकसद से यात्रा पर जा सकता है ।
- » गंत्व्य स्थल के हालात के बारे में जानकारियां तो खूब जुटाते हैं लेकिन यात्रा पर जाने के इच्छुक बिलकुल नहीं होते।

6-5 पर्यटन उद्ययोग को नुकसान पहुंचाने वाली दूसरी गतिविधियां

पर्यटन एक विश्वव्यापी उद्योग है । इससे देश को बहुत आर्थिक लाभ होता है । इसके अलावा पूरी दुनिया में बहुत सारे लोगों को यह रोजगार के अवसर प्रदान करता है । कोइ 'गंतव्य' पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकता है, पर्यटकों को आकरषित करने लायक वहां अच्छी सुविधायें और संसाधन भी हो सकते हैं, लेकिन यदि शांति और सुरक्षा बिगड चुकी होगी, तो टूरिस्ट उसे अपना 'गंतत्व्य' बनाना कभी पसंद नहीं करेगें । आर्थिक लाभ और प्रचार प्रसार के लिए गंतव्य स्थल पर शांति पूर्ण और सकारात्मक माहौल होना आवश्यक है।

आतंकवदी गतिविधियों के अलवा,विद्रोह, नफरत आधारित अपराध और राज्यस्तरीय हथियारबंद संघर्षों के कारण भी पर्यटन स्थलों पर हिंसा और उपद्रव के वातावरण बनते रहते हैं । ऐसे उपद्रव ग्रस्त स्थलों पर,पर्यटकों का आवागमन प्रभावित होता है । कई बार पर्यटन कार्यकर्ताओं में आपसी झगडा या मारपीट के कारण भी पर्यटन स्थल पर बुरा प्रभाव पडता है । साम्प्रदायिक दंगों, धार्मिक झगडों ,

राजनीतिक पार्टियो के आपसी मतभेदों,सुविधाओं की कमी अथवा आंदोलनों आदि के कारण भी हालात खराब हो जाते हैं । इसतरह के झगडे,हालांकि , पर्यटन गतिविधियों को नुकसान पहुंचान के लिए नहीं किये जाते, लेकिन, देखने वालों के मन में सुरक्षा की भावना पैदा होती है जिससे उनका मनोविज्ञान प्रभावित होता है जो उन्हें उपद्रव ग्रस्त 'गंतव्यों' पर जाने से रोकता है । मीडिया कवरेज और सजीव प्रसारण से इस तरह की खबरें सेकेंडों में पूरी दुनिया में फैल जाती हैं । इन खबरों से, उस 'गंतव्य' की यात्रा करने का निश्चय कर चुके पर्यटकों का इरादा प्रभावित होता है । स्वागती लोगों (host population) को याद रखना चाहिए कि ऐसी घटनाओं से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, यात्रियों को दुख पहुंचता है ।

विज्ञान और तकनी के विकास से पर्यटन ,पहले की तुलना में, बहुत सुरक्षित और आसान हो गया है । वही तकनीक जब बुरे लोगों या संगठनों के हाथ में आ जाती है तो उससे पर्यटन और पर्यटकों की गतिविधियों के लिए कई तरह की समस्यायें पैदा हो जाती हैं । अपने आप हुई या जानबूझ कर की गई तकनीकी खराबी के कारण,आरक्षण व्यवस्था ध्वस्त हो जाती है । टूरिज्म एक बेहद नाजुक व्यवसाय है । छोटी छोटी समस्यायें भी इसे भारी नुकसान पहुंचा सकती हैं । जानबूझ कर प्लान किये गये 'एक्सीडेंटस' बाधित नेटवर्क, ' 'कम्प्यूटर हैकिंग' और संचार सेवा की दूसरी नेटवर्कबाधाओं से टूरिज्म व्यवाय पर बुरा प्रभाव पडता है । अपना लक्ष्य साधने के लिए आतंकवादी संगठन कभी कभी निर्दोष व्यक्तियों को मोहरा बनाते हैं । 'बायो टेररिज्म' , 'हाईब्रिड टेररिज्म', 'साइबर वार' -अदृश्य युद्ध के हिस्से हैं। इनकी सहायता से आतंकवादी संगठन अर्थव्यवस्था और मनुष्यता को क्षति पहुंचाते हैं । दुनिया के लोगों को इसे ठीक से समझना और चौकन्ना चाहिए तथा अपने आस पास की संदिग्ध गतिविधियों को सम्बन्धित सुरक्षा एजेंसियों के संज्ञान में लाना चाहिए । आतंकवाद एक वैश्विक समस्या है,इसलिए प्रत्येक नागरिक का

यह कर्तव्य है कि वह सुनिश्चित करे कि उसके कार्यव्यवहार से टूरिज्म व्यवसाय बाधित नहीं हो रहा है।

अपनी प्रगति की जांच करें - 1

1- बताइए नीचे के कौन से कथन सही हैं -

क- आतंकवादियों के लिए टूरिज्म एक आसान निशाना है...;....;.....;.....

ख- टूरिस्टों को आकर्षित करने में मौखिक प्रचार बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।.....;.....

ग- आतंकवाद का मनोविज्ञान हमेशा एक जैसा रहता है .....;.....

घ्- 'साइकोपैथालाजी थियरी' दावा करती है कि आतंकवादी पागल नहीं होते है.....;.....

ङ- यात्रा करने की प्रवृत्ति व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक प्रोफ़ाइल और यात्रा प्रेरणा पर निर्भर करती है.....;.....

2– 'गंतव्य' पर आतंकवादी हमला और टूरिस्टों की आमद में क्या सम्बनध है ।

---

3 –'पर्यटन मांग' से आप क्या समझते हैं ?

---

4 – आतंकवादी हमलों के अलावा हिंसा के कौन से दूसरे रूप हैं, जिनका पर्यटन स्थल पर बुरा प्रभाव पडता है।

6-6 आतंकी आक्रमण के बाद पर्यटकों की देख भाल

आतंक फैलाने के लिए किसी स्थान पर हमला करने से पहले आतंकवादी संगठन विधिवत योजना बनाते हैं । उनका हमला एक दम से इतना अचानक होता है कि लोग अकबका कर रह जाते हैं । सुरक्षा तंत्र भारी दबाव में आ जाता है । टूरिज्म उद्ययोग पूरी तरह अपंग हो जाता है । पर्यटन स्थल का प्रशासन किसी भी तरह के आपातकालीन संकट से निपटने के लिए तैयार हो सकता है ,लेकिन,प्रशासन की तैयारी के मुकाबले आतंकी हमला ज्यादा गम्भीर और नियंत्रण से बाहर भी हो सकता है । किसी पर्यटन स्थल की यात्रा के कई सारे उद्येश्य हो सकते हैं । मगर ज्यादातर पयटकों का , मुख्य उद्येश्य आराम और मनोरंजन ही होता है। आतंकी हमला पर्यटकों के उत्साह को ठंढा कर देता कर देता है । वे वहां पर खुद को असुरक्षित महसूस करने लग सकते हैं । इतना ही नहीं, पर्यटन स्थल के लोगों की

कठिनाइयां बहुत बढ जाती हैं । उनका दैनिक जीवन पहले की तरह सामान्य नहीं रह जाता । हताहतों की संख्या प्रत्यक्ष दर्शियों को वहां आने से रोकती है । ऐसी कठिन परिस्थति में पर्यटन एजेंसी के स्टाफ को पर्यटकों की आवश्यकताओं को ठीक से समझने और पूरा करने का प्रयास करना चाहिए ।

6-6-1 आतंकी घटना के बाद पर्यटन स्थल की तात्कालिक आवश्यकताएं

सामन्य दिनों की तुलना में, आतंकी हमले के बाद, यात्रियों की जरूरतें बिलकुल बदल जाती हैं । चिकित्सा सहायता पहुंचाने के अतिरिक्त दूसरी आवश्यकताओं को भी तत्काल पूरा करना चाहिए । तात्कालिक जरूरतें इस प्रकार हैं–

क- **सही सूचना का वितरण --** सुरक्षा एजेंसियां , सुरक्षा कारणों से, आतंकी हमला हो जाने के बाद, बाहर से आने वाले पर्यटकों को, हमला प्रभावित क्षेत्र में प्रवेश करने से रोक देती हैं । चारो और डर तथा अफरातफरी का माहौल बन जाता है। यहां तक कि यात्री अपने होटल के कमरों तक नहीं जा पाते । उन्हें हालात की सही जानकारी चाहिए होती है लेकिन सही जानकारी नहीं मिल पाती ।

ख- **<u>अपने घर सम्पर्क साधने के लिए संचार व्यस्था--</u>** सुरक्षा कारणों से,अधिकारियों द्वारा टेली फोन सेवायें ठप कर दी जाती है जिससे टूरिस्टों की सम्स्यायें और बढ जाती हैं । मीडिया के लोग घटना स्थल पर हुए हमले की खबरें बार बार फ्लैश करने लगते हैं । घटना स्थल पर मौजूद यात्रीगण यद्यपि हमले में घायल नहीं हुए होते हैं, लेकिन वे परिजनों को अपने सकुशल होने की खबर दे पाने की स्थिति में नहीं होते ।

ग- **<u>सुरक्षित स्थान पर प्रस्थान --</u>** यात्री हालांकि आतंकी हमले से प्रभावित नहीं होते,लेकिन क्योंकि उस जगह शांति और एकांत का वातावरण बिगड चुका होता है,इसलिए वहां से निकल कर आस पास के किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाना चाहते हैं ।

घ- **<u>परिवहन सुविधा --</u>** किसी सुरक्षित जगह पर जाने के लिए यात्री समुचित परिवहन सुविधा की मांग कर सकते हैं । हो सकता है कि आतंकी हमले के बाद पैदा हुए सुरक्षा कारणों से परिवहन व्यवस्था पर रोक लगा दी गयी हो या लोगों का बाहर निकलना प्रतिबंधित कर दिया गया हो । इस तरह के हालात के कारण भी यात्री खुद को असहाय महसूस कर सकते हैं ।

ङ- **<u>मनोबल बनाए रखना --</u>** आतंकी हमले के तुरंत बाद की परिस्थितियों में यात्रियों का हौसला और उत्साह कमजोर पड जाता है, इसलिए उनका आत्मविश्वास बढाने के उपाय तुरंत शुरू कर देना जरूरी होता है । दूर देश से आये यात्रियों का उत्साहवर्द्धन और काउंसिलिगंआवश्यक हो जाता है। घटनास्थल पर मौजूद यात्रियों की सुविधा के लिए अलग से एक हेल्पलाइन नम्बर तत्काल शुरू कर देना और उनकी मनोवैज्ञनिक जरूरतो का खयाल रखना जरूरी हो जाता है।

च- **<u>पर्यटकों के सवालों को ध्यान से सुनना --</u>** यात्रियों की हर तरह की पूछ ताछ को ध्यान से सुनना तथा समुचित उत्तर देना बहुत जरूरी होता है । स्वागती स्टाफ जब यात्रियों की पूछ ताछ को अनसुना करते हैं तो यात्री खुद को उपेक्षित महसूस करने लगते हैं । स्वागती स्टाफ को अगर पर्यटकों को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त सूचनायें या जानकारी नहीं होती है तो इससे भी समस्या और बढ जाती है।

छ- **<u>सेवाओं का उचित दाम--</u>** आतंकी हमले के तुरंत बाद , बहुत से पर्यटन स्थल पर पर्यटन सेवायें महंगी हो जाती हैं जिससे हमला प्रभावित स्थल पर फंसे हुए

यात्रियों की समस्या और बढ जाती है । इस वजह से उस स्थान की छवि खराब होती है और लोग नकारात्मक रूप से मौखिक प्रचार करने लगते हैं।

6-2-2 आक्रमण के तुरंत बाद की परिस्थितियों में यात्रियों की जरूरतें पूरी करने का तरीका --_

आक्रमण के तुरंत बाद ' डेसिटनेशन' पर फंसे टूरिस्टों की जरूरतें , आक्रमण की तीब्रता और यात्री के घायल होने या न होने से निर्धारित होती हैं । यात्री गण चूकिं उस स्थान से अनजान होते हैं,इसलिए आतंकी हमले के बाद करीब करीब पूरी तरह वहां के स्वागती स्टाफ (होस्ट पापूलेशन) और अधिकारियों पर निर्भर हो जाते हैं ।

क. <u>त्वरित सहायता --</u> प्रभावित 'डेस्टिनेशन' पर फंसे टूरिस्टों की समस्याओं को दूर करने के लिए त्वरित गति से सहयोग और सहायता पहुंचाना आवश्यक होता है । जरूरतों को पूरा करने में विलम्ब का मतलब है समस्याओं को और बढाना । यात्रा व्यवस्थापकों को यात्रियों की जरूरतों को पूरा करने में तेजी दिखानी चाहिए ।

ख.**मानव संसाधन के माध्यम से सहायता करना** - आम तौर पर हमला के बाद की परिस्थितियों में जरूरतमंदों को त्वरित सहायता देने के लिए तकनालाजी का बडे पैमाने पर सहारा लिया जाता है । तकनालाजी के काम करने की गति तेज हो सकती है,लेकिन वह मनुष्य की भांति परस्थिति के अनुरूप निर्णय नहीं ले सकती । इसलिए, पर्यटकों के फोन काल का जवाब देने के लिए जानकार लोगों को ही तैनात करना चाहिए । केवल प्रशिक्षित कर्मी ही अपने अनुभव से , यात्रियों की आश्यकताओं को समझ कर,उन्हें समुचित स यलाह या सहायता दे सकता है । इस तरह के मानवीय प्रयासों से हमला प्रभावित यात्रियों में आश्वस्ति का भाव पैदा होता है।

ग. **निष्पक्ष मीडिया -** सुरक्षा कारणों से संचार सेवायें अगर बंद कर दी जाती हैं, तो घटना स्थल की रिपोर्ेटिग कर रहे अखबारों और चैनलों पर टूरिस्टों की तसवीरें दिखाने के लिए दबाव बनाना चाहिए ताकि उनके सगे सम्बन्धियों को उनके सुरक्षित होने की जानकारी हो सके ।

घ. **पर्यटक के निर्णय को महत्व देना --** पर्यटक अगर प्रभावित स्थान पर असुरिक्षत महसूस करते हैं और वहां से बाहर जाना चाहते हैं तो पर्यटन सेवा प्रदाताओं को चाहिए कि उन्हें उसी स्थान पर रूके रहने के लिए बाध्य न करें । उस परिस्थति में टूरिस्टों की इच्छा को महत्व और हर सम्भव सहायता देनी चाहिए ।

ङ. **<u>प्रशिक्षित पेशेवर छवि का प्रदर्शन --</u>** ऐसी परिस्थिति में, शांत और धर्यशील रह कर पर्यटकों की जरूरतों पर ध्यान दे सकने में सक्षम प्रशिक्षित पेशेवर सहायकों को ही पर्यटकों की सेवा में नियुक्त करना चाहिए । पेशेवर सहायक यदि धैर्य पूर्वक पर्यटकों से अच्छा व्यवहार करने के लिए प्रशिक्षित नहीं होंगे तो उससे पर्यटन स्थल की छवि पर बुरा असर पडेगा ।

च. **<u>कर्मचारियों का सशक्तीकरण -</u>** हमले के बाद की परिस्थिति को सम्हालने के लिए , जिम्म्ेदार अधिकारियों की सख्या बढा देनी चाहिए ताकि वे ज्यादा जिम्मेदारी से टूरिस्टों की देख भाल कर सकें ।

छ. **<u>टूरिस्ट हित धारकों(स्टेक होल्डर्स) में आपसी सहयोग-</u>** प्रभावित स्थल पर पर्यटकों की जरूरतों का खयाल रखने के लिए सभी टूरिस्ट एजेंसियों में आपसी सहयोग की भावना होनी चाहिए । उनके बीच का आपसी मतभेद, पहले से ही मुश्किलें झेल रहे पर्यटकों की जरूरी सेवाओं को प्रभावित कर सकता है जबकि आपसी सहयोग से पर्यटकों का भरोसा बना रहेगा जो बाद में फायदे मंद साबित होगा ।

6.7 पर्यटन सेवाओं का पुंर्नसृजन

पर्यटन से जुडी सभी सेवायें अंत:सम्ब्द्ध होती हैं । किसी घटना का पर्यटन के आरम्भिक और मध्वर्ती बाजारों पर भी प्रभाव पडता है । आतंकी आक्रमण के तुरंत बाद सारा ध्यान प्रभावित पर्यटन स्थल पर केन्द्रित होना चाहिए । किसी भी तरह की लापरवाही पर्यटन की भावी गतिविधियों को प्रभावित कर सकती है । प्रभावित स्थल पर सामान्य दिनो जैसा पर्यटकों का आवागमन फिर से शुरू हो सके, इसके लिए पर्यटन सेवा के जिम्मेदारों को दिन रात मेहनत करनी चाहिए । हालात सामान्य होने में देरी से लोगों में गलत संदेश जा सकता है और उस स्थान की यात्रा में टूरिस्टो की रूचि खतम भी हो सकती है । इसलिए उस स्थान की नये सिरे से मारकेटिंग करने के लिए बिलकुल नई रणनीति अपनानी चाहिए । प्रभावित स्थल को दुरूस्त और सम्बन्धित सेवायें बहाल करने में विलम्ब हो रहा हो तो आस पास का कोई अन्य स्थल टूरिस्टों के ध्यान में लाया जा सकता है। बार बार आते रहने वाले पर्यटकों को तो अवश्य ही आने के लिए प्रेरित करना चाहिए । स्थल की छवि बनाये रखने के लिए मौखिक प्रचार का उपाय भी अपनाना चाहिए । ऐसा करते रहने से आने वाले दिनों में धीरे धीरे ,उस स्थल के प्रति टूरिस्टों का विश्वास और यात्रा की अभिरूचि बहाल करना मुमकिन हो जायेगा । पर्यटकों में पहले जैसी रूचि बहाल करने के लिए, पर्यटन के विकास से सम्बद्ध सभी एजेंसियों को मिल जुल कर प्रयास करना चाहिए । उस स्थल की अद्‌वितीय विशेषतओं को सामने लाना चाहिए और दुनिया भर के संभावित पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए समुचित विज्ञापन नीति पर अमल करना चाहिए । सुरक्षा तंत्र का उपयोग बहुत बुद्धिमानी से करना चाहिए । दुबारा आतंकी हमला न हो, इसका पूरा इंतजाम सुनिश्चित करना चाहिए । आतंकी उस स्थल पर दूसरे तरह से भी आक्रमण कर सकते हैं इसलिए दुबारा आक्रमण रोकने के लिए, चौबीसो घंटे

पेशेवर सुरक्षा कर्मियों की निगरानी चलती रहनी चाहिए । नयी रणनीतियों की भी समय समय पर समीक्षा और जरूरी होने पर बदलवाव भी, करते रहना चाहिए । 'माक' अभ्यास अवश्य ही करते रहना चाहिए और किसी भी आवश्यकता पर गंभीरता से अमल करना चाहिए ।

प्रभावित पर्यटन स्थल को टूरिस्ट मानचित्र में फिर से वापस लाना उस स्थल के सभी पर्यटन हित धारकों के आपसी सहयोग और कठिन मेहनत पर निभर करता है । प्रभावित स्थल का यदि जल्द से जल्द पुन•रूद्धार नहीं कर लिया गया तो वहां की पर्यटन गतिविध को लम्बे समय तक के लिए अपूरणीय हानि उठानी पड सकती है । अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रभाव के अंतर को ठीक से समझ कर पुनरूद्धार के काम को युद्धस्तर पर पूरा करने में जुट जाना चाहिए अन्यथा वह पर्यटन स्थल टूरिस्टों द्वारा हमेशा के लिए भुला दिया जायेगा ।

अपने प्रगति की जांच करें-

1) <u>निम्न में से कौन सा कथन सही नहीं है ।</u>

क) आतंकी हमले का ,वहां पर मौजूद पर्यटकों के मनोबल पर सीधा असर पडेगा । .....

ख) हमले के बाद की बदली हुई स्थिति में पर्यटकों की जरूरतें एक दम से बदल जाती हैं । .....

ग) पर्यटन सेवायें परस्पर सम्बन्धित नहीं होतीं हैं।.....

घ) प्रभावित स्थल का पुनरूद्धार करने की रणनीति में स्थायी बदलाव कर देना चाहिए । .....

2) आतंकी हमले के तुरंत बाद, प्रभावित पर्यटन स्थल पर मौजूद पर्यटकों की तात्कालिक आवश्यकतायें बतायें ।

---

3) आतंकी हमले के बाद की परिस्थतियों में आप पर्यटकों की जरूरतों को किस तरह पूरा करेंगे ।

---

4) हाल के दिनों में आतंकी हमला झेल चुके पर्यटन स्थल के जीणोद्धार के लिए आप क्या क्या__प्रयास करेंगे। ।

6.8 समापन

पर्यटन उद्योग दुनिया भर के विभिन्न समुदायों ,सभ्यताओं और देशों के सम्बन्धों को मजबूत बनाने के लिए जाना जाता है जबकि आतंकवाद समाजों के बीच दीवाल

खडी करता है । पर्यटन उद्ययोग पर आतंकवाद के दुष्प्रभाव का आकलन सम्भव है और यदि सही रणनीति अपनाई जाय तो प्रभावित स्थल पर पर्यटन गतिविधियों को फिर से शुरू किया जा सकता है । पर्यटन हितधारकों को पूरी तरह सतर्क तथा इस तरह की किसी भी परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए मानसिक तौर पर तैयार रहना चाहिए । आतंकी हमलों से लोगों में खौफ फैल जाता है । यह खौफ यदि लम्बे समय तक रहा तो पर्यटकों का आवागमन बाधित हो जायेगा । पर्यटन स्थल की ओर पर्यटकों का आना जब कम होने लगेगा तो उससे मेजबान लोगों का मनोबल टूटने लगेगा और अंतत: पर्यटन उद्ययोग को ही सारा नुकसान झेलना पडेगा । मेजबान लोगों को इसे चुनौती की तरह लेना चाहिए और परिश्रम पूर्वक प्रभावित स्थल को फिर से पर्यटकों के लायक बना देना चाहिए । पेशेवर पर्यटन हितधारकों को आतंकवाद प्रभाति स्थलों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए । जब कभी मौका हो , आतंक प्रभावित स्थलों पर अवश्य जाना चाहिए और वहां रहने वाली शांति प्रिय आबादी की सहायता करनी चाहिए । हमला चाहे दुनिया के किसी भी हिस्से में हुआ हो , इस तरह की पहल से, पर्यटन उदयोग पर आतंकवाद के असर को मिटाना सम्भव हो जायेगा । **आतंकवाद पर्यटन गतिविध को क्षति पहुंचाता है जबकि पर्यटन ही अंतत: दुनिया से आतंकवाद को मिटायेगा ।**

6.9 प्रमुख शब्द

साफ्ट टारगेट :: वह टारगेट (लक्ष्य) जिसपर हमला करना आसान हो ।

रसिस्टेंस :: विरोध ।

इटिनरेरी :: यात्रा प्लान

डेलिबरेट :: किसी निश्चित उद्देश्य से किया गया कोई काम ।

6-10 अभ्यास की प्रगति को जानने के लिए उत्तर

अपनी प्रगति को जाचें- 1

क) <u>सही</u>

ख) <u>सही</u>

ग) <u>गलत</u>

घ) <u>गलत</u>

ङ) <u>सही</u>

2) अपने जवाब के लिए Sec 7.4.1 को आधार बनाएं

3) अपने जवाब के लिए Sec 7.4;3 को आधार बनाएं

4) अपने जवाब के लिए Sec 7;5 को आधार बनाएं

<u>अपनी प्रगति की जांच करें 2</u>

क) सही

ख) सही

ग) गलत

घ) गलत

2) अपने उत्तर के लिए सेक्सन 7.6.1 को आधार बनायें ।

3) अपने उततर के लिए सेक्सन 7.6.2 को आधार बनायें ।

4) अपने उततर के लिए सेक्सन 7.7 को आधार बनायें ।

6;11 इस यूनिट के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें --

एस सुन्दर रमन :: कश्मीर घाटी के पर्यटन पर आतंकवाद का असर : एक विश्लेषण । रूबी पब्लिकेशन नयी दिल्ली 2017

(Impact of Terrorism on Kashmir Valley Tourism an Analysis, Ruby Publication, New Delhi, 2017)

ग्लेस्सेर : पर्य्रटन उद्ययोग में संकट प्रबंधन ,एल्सेविएर ,लंदन,2004

Glaesser Crisis Management in the Tourism Industry, Elsevier, London, 2004

.....